उदारीकरण के परिप्रेक्ष्य में गीतांजलि श्री की रचनाधर्मिता का मूल्यांकन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा की पी–एच.डी (हिन्दी)
की उपाधि हेतु शोध प्रबंध की

रूपरेखा

2017

निर्देशक

डॉ. प्रेमशंकर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

शोधार्थी

पूजा यादव

विभागाध्यक्षा

प्रो.शर्मिला सक्सेना

प्रमुख कला संकाय

प्रो.जे. के. वर्मा

हिन्दी विभाग
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा 282005

उदारीकरण के परिप्रेक्ष्य में गीतांजलि श्री की रचनाधर्मिता का मूल्यांकन

प्रस्तावना : उदारीकरण का आगमन भारत में 90 के दशक से माना जाता है। भूमंडलीकरण की विचारधारा के तहत उदारीकरण का ध्यान–कॉर्पोरेट क्षेत्र, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और सरकारी उद्योग के दायरे में सीमित हैं। उदारीकरण के चलते मानव जीवन और समाज विभिन्न क्षेत्रों में उथल–पुथल से भर गया। पूरी समाज व्यवस्था व् संसाधनों तक अपनी निर्बाध और एकाधिकार पहुँच बनाये रखने के लिए विश्व पूँजीवादी व्यवस्था महानगरीय सभ्यता और जीवन–शैली को बढ़ावा देने में लगा रहता है। यह ऐसी राजनीतिक संस्कृति हैं, जिसमें उपभोक्तावाद नागरिकों पर हावी रहता है। जिसमें बाजार आधारित नये रूपों में उदारतावादी लोकतंत्र सत्ता की विराट संरचनाओं के राजनीतिक–सांस्कृतिक वर्चस्व को बनाये रखने का जरिया बन गया है।

यह समझा जाता है कि इस वर्चस्व के जरिये उदारतावादी राज्य हमारे समाज में राजनीतिक और सांस्कृतिक निश्चित करता है। इसमें व्यक्ति की आर्थिक स्वतंत्रता को महत्व दिया गया देश के हर कौने के लोगों ने अपने लिए आवाज उठानी प्रारम्भ कर दी।

साहित्य में भी इस दौर से की दशा व दुनिया बदलने लगी। स्त्रियां घरों से बहार निकलकर श्रम के बाजार में उनकी भागीदारी बढ़ी इसमें जिन पुस्तकों ने साहित्य और विचारों की दुनियां में स्त्री के महत्व को स्थापित किया,उनमें सिमोन द बोउआर, केट, जर्मन ग्रीयर की महत्वपूर्ण भूमिका रही परन्तु हिन्दी के स्त्री लेखन की पृष्ठभूमि में इन विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका नहीं हैं, परन्तु हिन्दी के देह मुक्ति, लिंग–भेद जैसे विचारों के करीब दिखाई पड़ता है।

हिन्दी में पितृ सत्ता को सीधे चुनौती देने का साहस महादेवी वर्मा की 'श्रृखला की कड़ियाँ' (1942) में स्त्री की सामाजिक अस्मिता को महत्व देते हुए गतिशील व प्राण वेग करने की बात कही इसीलिए हिन्दी के स्त्री लेखन की दो धारा दिखाई पड़ती हैं। पहली धारा जो भारतीय समाज में नवजारण की परम्परा से प्रभावित है–कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मंजुल भगत, चित्रा मुद्गल, मेहरून्निसा परवेज, आदि।

दूसरी वह जो पश्चिम से प्रभावित होती हुई पितृ सत्ता की देह, धर्म, अर्थ, प्राचीनतम से जोडती है इनमें प्रमुख प्रभाखेतान, मृदुला गर्ग, मैत्रयी पुष्पा, अर्चना वर्मा, रमणिका गुप्ता, नासिरा शर्मा और गीतांजलि श्री हैं।

'अनुगूँज' गीतांजलि श्री का पहला कहानी संग्रह है इन्ही दस कहानियों से पहचान का सिलसिला शुरू हुआ एक नई संवेदना जो विद्रोह और प्रतिरोध को उजागर करते वक्त भी उनको कमजोर बनाती हताशा को अनदेखा नहीं करतीं, इशारों और बिम्बों के सहारे चित्रण करने वाला शिल्प, और शिक्षित वर्ग की आधुनिक मानसिकता को दिखाती उनकी बोलचाल की भाषा ऐसे तत्वों से बनती है गीतांजलि श्री की लेखकीय पहचान।

गीतांजलि श्री समकालीन साहित्यकारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है समाज में बढ़ रहे साम्प्रदायिकता–जिसमें मानव के विघटन और हिंसा के होते हुए मानव मूल्य का पतन, राजनीति और हिंसा, स्त्री और हिंसा, हिन्दू–मुस्लिम टकराव के चलते आम जनता के डर, दर्द, दुःख, रिश्तों में आती हुयी अर्थ केंद्रीयता को उजागर किया गया है और भारत सहित विश्व आज आतंकवाद जैसी भायानक बीमारी से जूझ रहा उसका उल्लेख इनके साहित्य में किया गया है। जिनमें रोज मर्रा की जिन्दगी के परखच्चे उड़ा कर रख दिये हैं हमें न्यूज पेपर आदि में सुनने को मिल ही जाता है कि आज यहां और कल वहां बम फटा और आम आदमी यही डर में जीने को विवश है कि परसों हमारा घर तो नहीं है।

प्रमुख बात यह है कि गीतांजलि श्री का पहला कहानी संग्रह अनुगूँज था दूसरा वैराग्य, तीसरा माँ मार्च और साकुरा इन तीनों संग्रहों में जीवन का एक अद्भुत तारतम्य है जो गीतांजलि श्री की रचना शीलता में है–जीवन और मृत्युबोध भी है उनकी एक कहानी में तो मृत्यु जीवन का एक हिस्सा है।

‘कसक’ कहानी में हमें एक ऐसे पात्र से परिचित कराती है जो जीवन भर पूरी जिन्दगी जीती और अंत में 13 मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर लेती है। मृत्यु उसके जीवन का एक हिस्सा है और बिन आंसू बहाए जीवन से चली भी जाती है।

शोध की संभावना और महत्व – गीतांजलि श्री की अजीब तरह के फक्कड़पन एक अलग तरह की दार्शिकता और भाषा शैली में अलग तरह की रवानगी है यही अलगपन उनके कथाकार को व्यक्तित्व प्रदान करती हैं। गीतांजलि श्री अपने समय की नब्ज को पकड़ कर रचना करती हैं, पारंपरिक ढांचे में लिखने वाले लेखकों को और पढ़ने वाले पाठकों को कई बार भी कला को दोयम दर्जे की चीज मानता है और साहित्य में ताओत्से तुंग के शब्दों में कहा जाये तो ‘‘मूर्खता पूर्ण परिस्थितियों के मूर्खता पूर्ण समाधान खोजना मनुष्य का शाश्वत उद्योग बन चुका’’ गीतांजलि श्री अपनी रचनाओं में इस तरह के मिथक को नकारती हैं।

गीतांजलि श्री के साहित्य पर अभी तक इस दृष्टि से कार्य नहीं किया गया है। उदारीकरण के प्रतिमान को देखते हुए गीतांजलि श्री के रचना धर्मिता की मूल्यांकन मेरे शोध विषय का आधार है। अपने शोध कार्य के अंतर्गत में तुलनात्मक, समीक्षात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक प्रविधियों का प्रयाग करूगीं ।

शोधार्थी

(पूजा यादव)

उदारीकरण के परिप्रेक्ष्य में गीतांजलि श्री की रचनाधर्मिता का मूल्यांकन

भूमिका –

1. **उदारीकरण का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य**
   - उदारीकरण की पृष्ठभूमि
   - उदारीकरण की अवधारणा का विकास
   - उदारीकरण का वैचारिक महत्व
   - उदारीकरण : उपलब्धियाँ और सीमाएं
2. **गीतांजलि श्री की रचनात्मकता का देश काल**
   - रचनात्मक लेखन के स्रोत
   - कृतित्व
3. **गीतांजलि श्री की रचना धर्मिता और उदारीकरण**
   - गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में उदारीकरण का स्वरूप
   - गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में हाशिए का प्रश्न
   - गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में संचार क्रान्ति और साम्प्रदायिकता
   - गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में स्त्री प्रश्न
4. **संचार क्रांति और कथा भाषा**
   - संचार और भाषा का अंतर संबन्ध
   - संचार के नये माध्यम और भाषा की सृजनात्मकता
   - गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में कथा भाषा के विकास की प्रक्रिया
5. **समकालीन कथा साहित्य में व्याप्त उदारीकरण का स्वरूप और गीतांजलि श्री का वैशिष्ट्य**
6. **उपसंहार**
   - **आधार ग्रन्थ**
   - **संदर्भ ग्रंथ**
   - **परिशिष्ट**

आधार ग्रन्थ

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1	अनुगूँज	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	1991
2	हमारा शहर उस बरस	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	1998
3	वैराग्य	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	1999
4	माई	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	2004
5	ख़ाली जगह	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	2006
6	तिरोहित	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	2007
7	माँ मार्च और साकुरा	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	2008
8	प्रतिनिधि कहानियां	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	2010
9	यहाँ हाथी रहते थे	गीतांजलि श्री	राजकमल प्रकाशन	2012

सहायक ग्रथं

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1	भारत का भूमंडलीकरण	संपा़ अभय कुमार दुबे	लोक वाणी	2006
2	भूमंडलीकरण और स्त्री	कुमार भास्कर	राजकमल प्रकाशन	2007
3	भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास	पुष्पपाल सिंह	राजकमल प्रकाशन	2008
4	उदारीकरण की तानाशाही	प्रेम सिंह	राजकमल प्रकाशन	2006
5	हिंदी साहित्य का संवेदना का विकास	राम स्वरूप चतुर्वेदी	लोक वाणी	2001
6	हिंदी उपन्यास का विकास	मधुरेश	लोक वाणी	2002
7	एक दुनियां समानान्तर	राजेन्द्र यादव	राधाकृष्ण	2001

8	परिधि पर स्त्री	मृणाल पांडे	राधाकृष्ण	2008
9	संचार समाज और साहित्य	संजय सिंह बघेल	राधाकृष्ण	2008
10	जन संचार माध्यम, भाषा और साहित्य	सुधीर पचौरी	श्री नटराज प्रकाशन	2002
11	भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति	बृंदा करात ,अनु.(ऊषा चौधरी)	ग्रंथ शिल्प	2008
12	प्रेम चन्दोत्तर कथा साहित्य और साम्प्रदायिक समस्याएं	ओम प्रकाश सिंह	नमन प्रकाशन	1998
13	नारी प्रश्न	सरला माहेश्वरी	राधाकृष्ण	1998
14	मीडिया और साहित्य	सुधीश पचौरी	राजसूर्य	2000
15	आधुनिक हिंदी कहानी नारी जीवन मूल्य	कृष्णकान्त भारद्वाज	अमन प्रकाशन	2009